Topic 32 आम्रेडित तथा अन्य

तस्य परमाम्रेडितम् ।

द्विरुक्तस्य परम् आम्रेडितं स्यात् ।

जिसका द्वित्व हुआ हो अर्थात् जो दो बार पढ़ा गया हो, उसका पीछेवाला रूप 'आम्रेडित' कहलाता है। उदाहरण के लिए 'कान् + कान्' में 'कान्' शब्द दो बार पढ़ा गया है, अतः प्रकृतसूत्र से पीछेवाले अर्थात् द्वितीय 'कान' शब्द की 'आम्रेडित' संज्ञा होती है।

कानाम्रेडिते ।

कान्नकारस्य रुः स्यादाम्रेडिते । काँस्कान, कांस्कान् ।

छे च ।

ह्रस्वस्य छे तुक् । शिवच्छाया ।

पदान्ताद्वा ।

दीर्घात् पदान्ताच्छे तुग्वा । लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया ।